जादुई
स्टारफ़्रूट
पेड़

जादुई स्टारफ्रूट पेड़

चीन की लोककथा

कई वर्ष पहले चीन के दक्षिण भाग में एक फल बेचने वाला रहता था. उसका नाम अह-दी था. वह इतना कंजूस और नीच था कि कोई उसे पसंद न करता था. लेकिन उसके स्टारफ्रूट इतने रसीले और स्वादिष्ट होते थे कि दूर-दूर से लोग उसके फल खरीदने आते थे.

एक दिन गर्मियों में, फल बेचने वाले ने दो टोकरियों में पीले, रसदार स्टारफ्रूट रख लिये और झटपट बाज़ार की ओर चल दिया. वहाँ बहुत भीड़ थी क्योंकि वह दिन मासिक मंडी का दिन था. लोग सामान खरीदने और नटों के कलाबाज़ी देखने आए थे. जिस जगह नट अपने करतब दिखा रहे थे वहीं पास में एक पेड़ के नीचे अह-दी ने अपनी दुकान सजा ली. ऐसी जगह पा कर वह बहुत प्रसन्न था. वह बुदबुदाया, "आज बहुत गर्मी है. लोगों को प्यास लगेगी. मैं अपने सारे पके और रसीले स्टारफ्रूट बेच दूँगा और खूब पैसे कमाऊँगा."

कुछ लोगों के पास इतने पैसे न थे कि वह स्टारफ्रूट खरीद पाते. वह ललचाई आँखों से फलों को सिर्फ देख सकते थे. अह-दी इतना नीच था कि वह इन गरीबों पर चिल्लाया, "क्या तुम कुछ खरीदोगे? अगर नहीं तो दूर हटो! मेरे काम में बाधा मत डालो!"

दुपहर के समय एक वृद्ध आया और फलों की दुकान के सामने खड़ा हो गया. मटमैले हरे रंग के उसके कपड़े गंदे थे और उसकी जेब में एक पैसा भी न था. उसके हाथ में सिर्फ पेड़ की एक डाल थी जिसे वह लाठी की तरह उपयोग कर रहा था. अपने सिर पर उसने तिनकों की टोपी पहन रखी थी. उसके झुर्रीदार चेहरे पर धूल और पसीना की परत थी. लेकिन अगर कोई ध्यान से देखता तो उसे अहसास होता कि वृद्ध कुछ अनोखा था. सूर्य के प्रकाश में उसकी गहरी, भूरी आँखें किसी रहस्यमय, हरे जेड के समान चमकती थीं.

वृद्ध ने अह-दी के रसीले स्टारफ्रूट देखे और कहा, "ओ अच्छे फल-वाले, मुझे बहुत प्यास लगी है लेकिन तुम्हारे फल खरीदने के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं. मुझे विश्वास है कि तुम एक दयालु व्यक्ति हो. एक वृद्ध पर तुम्हें अवश्य दया आयेगी और तुम एक रसीला स्टारफ्रूट मुझे दे दोगे."

"आगे चलो, बूढ़े भिखारी!" कंजूस अह-दी चिल्लाया. "मेरे स्टारफ्रूट बिकाऊ हैं. उन से मुझे धन मिलता है. मैं किसी को भी अपने फल मुफ्त नहीं देता."

"ओ अच्छे फल-वाले, मेरी बूढ़ी हड्डियों पर थोड़ा तरस खाओ. मुझे तुम्हारा सबसे बड़ा और स्वादिष्ट फल नहीं चाहिए. मुझे तो बस सबसे छोटा फल दे दो, ऐसा फल जिसे तुम शायद फेंक दोगे. मुझे विश्वास है कि स्वर्ग के देवों के राजा तुम्हारी अनुकंपा के लिए तुम पर कृपा करेंगे."

"तुम अपने को समझते क्या हो?" अह-दी चिल्लाया. "देवताओं के राजा की कृपा पाने के लिए मुझे तुम्हारी क्या आवश्यकता है? इसके पहले कि मैं अपनी लाठी से तुम्हारी पिटाई कर दूँ, चले जाओ यहाँ से!"

बाज़ार में आए लोगों ने शोर सुना तो वह फलों की दुकान के आसपास एक दायरा बना कर खड़े हो गए.

"तुम्हें शर्म आनी चाहिए, फल-वाले," एक आदमी ने कहा. "यह वृद्ध थके हुए और प्यासे हैं. उन्हें एक स्टारफ्रूट दे दो. तुम्हें हानि न होगी लेकिन एक छोटा फल उनकी प्यास बुझा देगा. तुम्हारी अनुकंपा के लिए स्वर्ग के देवराज तुम्हें अवश्य प्रतिफल देंगे."

"वह ठीक कह रहा है!" लोग चिल्लाए. "वृद्ध पर तरस खाओ."

"अरे वाह, ऐसी बातें कहना सरल है," अह-दी चिल्लाया. "यह स्टारफ्रूट तुम्हारे नहीं हैं जो इतनी सरलता से इसे दे रहे हो. इन्हें पैदा करने में तुम ने कोई मेहनत-मज़दूरी नहीं की है. अगर तुम लोग इतने ही दयालु हो तो तुम एक फल खरीद कर इस बूढ़े भिखारी को क्यों नहीं दे देते?"

उसी पल एक लड़के मिंग मिंग ने, जो एक नट था, अपना प्रदर्शन पूरा किया था. वह आगे आया और अपने तांबे के दो सिक्के उसने कंजूस अह-दी को दिये.

"मैं दादा जी के लिए एक फल खरीदूँगा," मिंग मिंग ने कहा. फिर वह वृद्ध की ओर घूमा और उसने विनम्रता से कहा, "दादा जी, आप अपने लिए एक बड़ा, रसीला फल चुन लें. चिंता न करें. मैंने फल-वाले को पैसे दे दिये हैं."

वृद्ध थोड़ा झिझके. "मैं तुम्हारे पैसे कैसे ले सकता हूँ? उन दो सिक्कों के लिए तुम ने बहुत मेहनत की थी."

"दादा जी, मेरे पास अधिक पैसे नहीं है, लेकिन जो कुछ भी है, मैं उसे बाँटने के लिए तैयार हूँ. मैं दुबारा करतब दिखाऊँगा और यह दयालु लोग मुझे कुछ और पैसे दे देंगे."

वृद्ध ने एक फल चुन लिया और उसे बीज-कोष तक पूरा खा गया. फिर उसने ध्यान से एक बीज निकाला और बाकी का बीज-कोष फेंक दिया.

"अहा, यह अच्छा है," उसने मुस्कराते हुए कहा. "धन्यवाद, बच्चे. तुम बहुत दयालु हो. अब इन लोगों के लिए एक प्रदर्शन करने में मेरी सहायता करो."

वृद्ध ने अपनी लाठी से ज़मीन में एक गड्ढा खोदा. फिर उसने उस गड्ढे में स्टारफ्रूट का बीज रख दिया और लड़के से कहा कि उसमें मिट्टी डाल कर अपने दोनों पाँव से दबा दे.

“अब इस बीज को पानी देना होगा. क्या कोई मुझे एक केतली में गर्म पानी ला कर दे सकता है?”

उसकी बात सुन कर लोग आश्चर्यचकित हो गए. दिन कितना गर्म था. गर्म पानी देकर वृद्ध बीज को अवश्य ही मार डालेगा.

“आप को सच में गर्म पानी चाहिए?” किसी ने पूछा. इस आशा में कि कोई इस गुत्थी को सुलझा देगा, लोग एक-दूसरे की ओर देखने लगे. कुछ लोग चुपचाप खड़े रहे और कुछ यह सोच कर कि गर्मी के कारण वृद्ध बहक गया थे, अपना सिर हिलाने लगे. आखिरकार, भीड़ में से एक व्यक्ति केतली में उबलता हुआ पानी ले आया. वृद्ध ने गर्म पानी ज़मीन पर छिड़का.

शीघ्र ही बीज से एक नन्हा पौधा ज़मीन से बाहर निकल आया. जब भीड़ आश्चर्य से देख रही थी, नन्हा पौधा ऊँचा होने लगा, वह ऊँचा होता गया, ऊँचा होता गया. लोगों की आँखें ऊँचे होते हुए पौधे के साथ ऊँची उठती गईं. उनके सिर पीछे, और पीछे झुकने लगे और इतना पीछे झुक गए कि उन्हें पेड़ का ऊपरी भाग दिखाई न दे रहा था. उन्हें पता न चला कि कब पेड़ ने बड़ा होना बंद कर दिया था, लेकिन पीछे झुकने के कारण उनकी गरदनों में दर्द होने लगा था.

वृद्ध ने अपनी लाठी से पेड़ की ओर संकेत किया और कहा, “पत्ते, मेरे अच्छे पेड़, पत्ते उगाओ!” और तुरंत ही सारा पेड़ हरे पत्तों से भर गया और चिलचिलाती धूप में लोगों को ठंडी छाया मिल गई.

सब लोग हक्के-बक्के से खड़े देख रहे थे. वृद्ध ने अपनी लाठी से पेड़ की टहनियों की ओर संकेत किया और कहा, “फूल, मेरे अच्छे पेड़, फूल खिलाओ!” और उसी पल पेड़ पर गुलाबी और बैंगनी फूल खिल आए.

भीड़ आश्चर्य से स्तंभित हो गई. विस्मय से लोगों ने ओह और आह कहा ही था कि वृद्ध ने एक बार फिर अपनी लाठी से पेड़ की ओर संकेत किया और कहा, "फल, मेरे अच्छे पेड़, मीठे रसीले फल दो!" हवा धीरे-धीरे चलने लगी और पेड़ पर लगे सारे सुंदर फूल डालों से टूट कर लोगों पर गिरने लगे. फूलों की जगह बड़े-बड़े, चमकीले स्टारफ्रूट पेड़ की डालों पर निकल आए.

इस बीच इस अद्भुत घटना का वृतान्त सारे बाज़ार में फैल गया. अह-दी सहित सब लोग भाग कर आये और वृद्ध और उसके अनोखे पेड़ के आसपास घेरा बना कर खड़े हो गए.

उन अधीर लोगों को शांत करने के बाद वृद्ध ने मिंग मिंग से कहा, "अब प्रदर्शन दिखाने की तुम्हारी बारी है. अब फुर्ती से इस पेड़ पर चढ़ जाओ और हम सब के लिए मीठे, रसीले फल तोड़ कर लाओ."

एक बंदर के समान लड़का पेड़ पर तुरंत चढ़ गया. वह फल तोड़ने लगा और नीचे खड़े लोगों को देने लगा. कंजूस फल-वाले को भी एक फल उसने दिया. अह-दी सोचने लगा, "हम्म्म.....बड़ी अजीब बात है! यह स्टारफ्रूट मेरी टोकरी में रखे फलों जैसे ही मीठे और रसीले हैं."
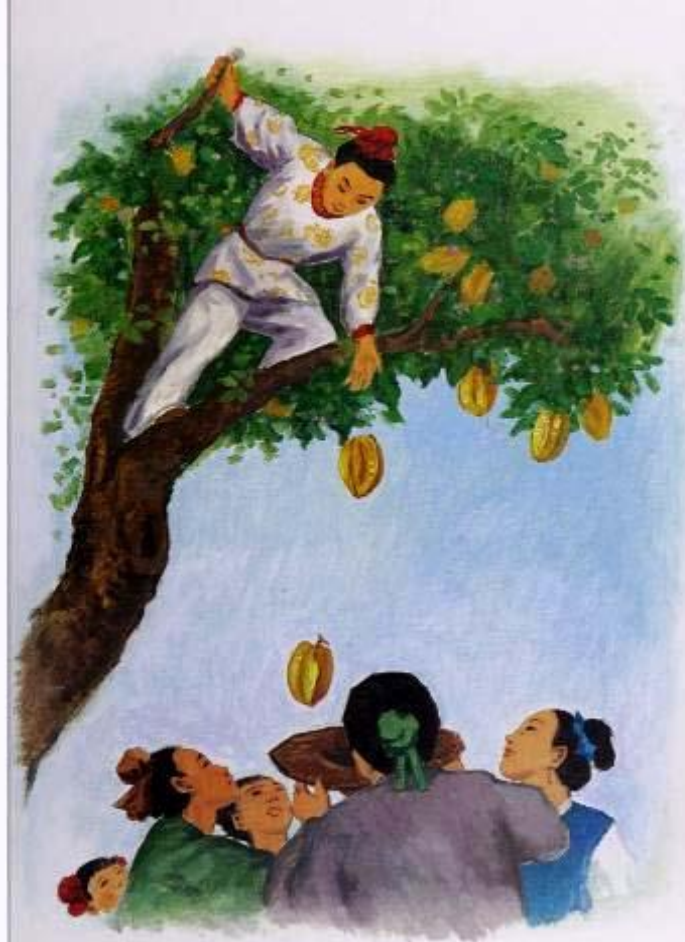
जब सब लोगों ने फल खा लिए तो वृद्ध ने अपनी लाठी उठाई और पेड़ के तने को उससे कई बार मारा. हर प्रहार के साथ पेड़ छोटा, और छोटा होता गया, जब तक कि वह एक हथेली जितना छोटा नहीं हो गया. फिर उसने वह पेड़ मिंग मिंग को दे दिया और कहा, "तुम्हारी सहायता के लिए तुम्हारा धन्यवाद, बच्चे. इस पौधे को अपने घर के आँगन में लगा देना और हर गर्मियों में तुम्हें प्यास बुझाने के लिए ढेर सारे स्टारफ्रूट मिलेंगे." मिंग मिंग ने उनका धन्यवाद किया. वृद्ध ने अपनी लाठी उठाई, झुककर लोगों का अभिनंदन किया और भीड़ के बीच से रास्ता बनाकर धूल भरी सड़क पर चल दिया.
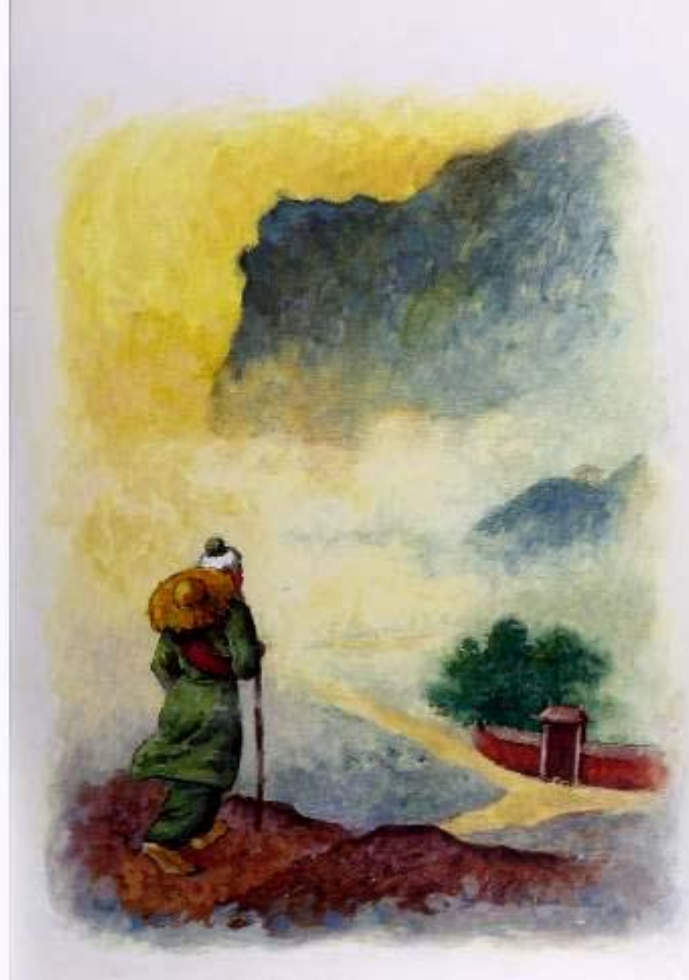
इस आश्चर्यजनक घटनाक्रम ने लोगों को भौंचक्का कर दिया था. लोग आँखें मलने लगे. जो कुछ उन्होंने देखा था उस पर उन्हें विश्वास न हो रहा था. यह निश्चित करने के लिए कि उन्होंने सच में मीठे, रसीले फल खाये थे वह अपने होंठ चाटने लगे.

अचानक अह-दी को अपने फलों का ध्यान आया. इतने लोगों के बीच वह और फल बेच सकता था. लेकिन जब उसने अपनी टोकरियों को देखा तो पाया कि वह खाली थीं. वह ज़ोर से चीखा.

“मेरे फल! मेरे फल!” कंजूस अह-दी चिल्लाया. “मेरी टोकरियों से सारे फल गायब हो गए हैं! उस नीच वृद्ध ने ही मेरे फल चुराये होंगे और लोगों को बांट दिये होंगे. ओह! ओह! मैं लुट गया!”

अपनी खाली टोकरियाँ वहीं छोड़ कर अह-दी, उस वृद्ध को ढूँढने के लिए धूल भरे रास्ते पर दौड़ने लगा. लेकिन हाय! उसे तो सिर्फ वृद्ध की लाठी मिली जो रास्ते के निकट एक जगह पड़ी थी.

कंजूस अह-दी पर सब लोग हँसने लगे.

"इस नीच फल-वाले को सबक सिखाने के लिए स्वर्ग के देवों के राजा ने उस वृद्ध को अपना दूत बना कर भेजा होगा," भीड़ में से एक ने कहा.

"उस वृद्ध के साथ जो व्यवहार इस कंजूस फल-वाले ने किया था उसके लिए उसके साथ ऐसा ही नहीं चाहिए था," एक दूसरे व्यक्ति ने कहा.

हाँ, हाँ, सब लोगों ने इस बात का समर्थन किया. स्वर्ग के देवों के राजा बुद्धिमान और न्यायप्रिय हैं. जिन लोगों के मन में वृद्धों के प्रति सम्मान नहीं है और जो दयालु नहीं हैं उन्हें अवश्य दण्डित किया जाता है. जो दूसरों का ध्यान रखते हैं और उनके साथ अपनी चीज़ें और संपत्ति बांटते हैं उन्हें पुरस्कृत किया जाता है.

समाप्त